P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# राजस्थान राज्य में विधान सभा चुनाव में जाति का प्रभाव (2018 चुनाव का विश्लेषण)

**शालिनी सान्दू**
व्याख्यता,
लोक प्रशासन विभाग,
संत जयाचार्य महिला महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

आजादी के पश्चात् लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को गतिशीलता प्रदान करते हुए राज. विकास व आधुनिकीकरण की और कदम बढ़ाते हुए राजस्थान की राजनीती पर गैर राजनैतिक तत्व के रूप में निर्वाचनों पर जातिगत प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। 72 वर्ष में 15 विधान सभा चुनावो के विश्लेषण के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि राजस्थान की राजनीती पर परम्परागत राजनैतिक मुद्दे स्थिल होकर गैर राजनैतिक तत्व के रूप में जाति ने निर्णय प्रक्रिया व सम्पूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया को प्रभावित करके अपने वर्चस्व में अभिवृद्धि की है। 15वें विधान सभा निर्वाचन में जातिगत प्रभावों व मुद्दों का स्पष्टीकरण किया गया है।

**मुख्य शब्द :** चुनाव, दल, जाति, लोकमत।

**प्रस्तावना**

72 वर्ष पूर्व आजादी के सूर्योदय पश्चात् लोकमत द्वारा लोक तांत्रिक व्यवस्था का शुभारम्भ हुआ। 30 मार्च 1949 को राजस्थान भारत के एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया था, तब से लेकर अब तक राजस्थान की धरती में कई उतार चढ़ाव देखे गये है। राजस्थान में हाल ही 15वीं विधान सभा के लिए चुनाव संपन्न हुए यहाँ 200 सीटें है और विधायको का चुनाव सीधे जनता करती है। भारतीय राज राजस्थान में एक सदनीय विधान मण्डल है। राजस्थान में वैसे तो इस विधान सभा चुनाव में अनेक दलों में भाग लिया जैसे आप पार्टी, बहुजन समाज पार्टी , भारत वाहीनी पार्टी, राष्ट्रीय लिकतान्त्रिका पार्टी इत्यादि। परन्तु इन सब में कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी का वर्चस्व रहा।

यहाँ किसी भी जाति के 10 फीस्दी वोट बैंक भी बना रहता है तो यह किसी भी सरकार को बनाने में व गिराने में बहुत हद तक साबित हो सकता है। यहाँ के लिए कहा जाता है की यहाँ रेत का बवंडर और जातिगत समीकरण कभी भी आंधी ला सकते है। चुनाव नजदीक आते ही राजनैतिक पार्टियाँ जीतने की उम्मीद में अपना हित सादने लगते है और चुनाव जीतने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी तरीके अपनाने लगते है, वही अगर चुनाव जीतना है तो जाति का बोलबाला काफी उफान पर होता है। अगर किसी राजनैतिक पार्टी के जातिगत समीकरण सही बैठ जाते है तो चुनाव में बाजी पक्की मान ली जाती है और वही अगर जातिय समीकरण खिलाफ हो तो चुनाव में पासा पलते भी देर नहीं लगती। ऐसे में राजस्थान का चुनाव जाती के आधार पर काफी अहम् माना जाता है। [1]

भारत में चुनाव किसी भी राज्य में हो, जातियों की भूमिका अहम रहती है। राजस्थान भी इससे अछूता नहीं है। साल 2003 एवं 2013 के विधान सभा चुनाव में भूतपूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने जातिकार्ड खेलते हुए कहा था कि वो जाटों की बहु है, राजपूतों की बेटी है और गुजरों की समधिन है। इन तीनो जातियों की राज्य की राजनीती में दिशा तय करने में बड़ी भूमिका रहती है, जबकि राजपूत और जाट परस्पर विरोधी माने जाते है। [2]

**जातिय समीकरण व उनका महत्त्व**

राजस्थान की राजनीती को 'अजगर' की राजनीती भी कहा जाता है अ (अहीर), ज (जाट), ग (गुर्जर), र (राजपूत)

राज्य में करीब 300 जातियां है जिनमे से 51% हिस्सा ओ.बी.सी. का है। 18% एस.सी. और 13% एस.टी. है। सामान्य वर्ग की आबादी 18 % है चुनाव में जीत हासिल करने के लिए जाट, राजपूत, ब्राह्मण, गुर्जर और मीणाओ की गोल बंदी काफी अहम् मानी जाती है। [3]

**राजपूत**

अगर बात की जाये राजपूत समुदाय की तो राजस्थान में राजपूतों को भारतीय जनता पार्टी का वोट बैंक माना जाता है, वर्तमान की राजनीती में राजस्थान की 200 विधानसभा सीटों में से 100 सीटों पर राजपूतों की अच्छी पकड़ मानी जाती है, अगर राजपूत समुदाय का वोट किसी एक पार्टी के पक्ष में चला जाए तो 100 सीटों पर जीत हार का फैसला करने में ये समुदाय अहम् भूमिका निभाता है, ऐसे में देखा जाए तो अगर किसी पार्टी को राजपूतों का समर्थन हासिल है तो उसकी सरकार बननी लगभग तय मानी जाती है। इस बार के चुनाव में राजपूत बी.जे.पी. सरकार से नाराज थे इनमे कई मुद्दे थे जैसे –आनंदपाल के एन्काउंटर के विरोध में। राजपूत समुदाय के लोगो ने हिसक विरोध प्रदर्शन किया, जैसलमेर में चतुर सिंह एनकाउन्टर और गजेन्द्र सिंह का भाजपा प्रदेशाध्यक्ष नहीं बनने की वजह से भी राजपूत समाज नाराज था। वही मानवेन्द्र सिंह ने कांग्रेस का हाथ थाम लिया, इसे भी नाराजगी के रूप में जा रहा है।

**जाट**

राजस्थान की राजनीति में जाटों का शुरू से जलवा देखने को मिला है. राज्य के शेखावटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनूं, चूरू) के साथ ही पश्चिमी राजस्थान कहने जाने वाले मारवाड़ (बारमेड़, नागौर) में इस समुदाय की पकड़ है. राजस्थान में जाटों का काफी चतुर समुदाय के वोटर के तौर पर देखा जाता है. ऐसा इसलिए क्योंकि इस समुदाय के लोग वक्त की नजाकत देखकर वोट करते हैं. ऐसा कहा जा सकता है कि लहर जिस ओर होगी, इस समुदाय का वोट उसी तरफ होगा. हालांकि पारंपरिक तौर पर जाट समुदाय को कांग्रेस का वोट बैंक माना जाता है. लेकिन अब ये समुदाय बीजेपी और कांग्रेस दोनों के बीच बंट गया है. जाट समुदाय एक खेतिहर जाति है. कांग्रेस ने जागीरदारी प्रथा खत्म कर जाटों को जमीन का मालिकाना हक दिलवाया था. जिसके कारण ये कांग्रेस का वोट बैंक बना। हालांकि इस बार फिर जाट समुदाय चुनाव में कुछ खेल कर दें, इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

**गुर्जर**

परंपरागत रूप से गुर्जर का समर्थन भारतीय जनता पार्टी को हासिल है. लेकिन इस समुदाय के सबसे बड़े नेता सचिन पायलट कांग्रेस के नेता हैं. दरअसल, साल 1980 में गुर्जर समुदाय के राजेश पायलट कांग्रेस के टिकट पर भरतपुर से सांसद चुने गए और बीजेपी के लिए यहीं से मामला गड़बड़ाना शुरू हो गया. पहले राजेश पायलट और अब सचिन पायलट के होने से गुर्जर समुदाय का वोट बैंक बीजेपी से कांग्रेस की तरफ शिफ्ट होता देखा जा रहा है क्योंकि गुर्जर समुदाय के लोग सचिन पायलट को मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहते थे, इसके अलावा बीजेपी से नाराजगी का एक कारण गुर्जर समुदाय के पास यह भी है कि बीजेपी गुर्जरों को आरक्षण दिलाने में भी असफल रही है. समय–समय पर गुर्जर आंदोलन भी बीजेपी की सरकार में हुए हैं लेकिन उनकी बातों और मांगों को हर बार अनदेखा ही किया गया. हालांकि गुर्जर आरक्षण आंदोलन के दौरान किरोड़ी सिंह बैंसला ने अगुवाई की थी. किरोड़ी सिंह बैंसला बीजेपी की टिकट पर लोकसभा चुनाव भी लड़ चुके हैं. ऐसे में एक और कांग्रेस से सचिन पायलट हैं तो दूसरी और बीजेपी से किरोड़ी सिंह बैंसला हैं. दोनों बड़े नेता हैं और ऐसे में गुर्जर समुदाय का वोट दोनों पार्टियों के बीच बंट गया है।

**मीणा**

राजस्थान में गुर्जर और मीणा समुदाय को एक दूसरे का विरोधी माना जाता है. ऐसे में जहां गुर्जर परंपरागत रूप से बीजेपी के साथ माने जाते हैं तो मीणा परंपरागत रूप से कांग्रेस की तरफ देखे जाते हैं. लेकिन राजनीति में उथल–पुथल न हो तो वो राजनीति नहीं मानी जाती है. अब जहां गुर्जर कांग्रेस की तरफ जा रहे हैं तो वहीं बीजेपी मीणा समुदाय को अपनी ओर खींचने में लगी है. साल 2008 में किरोड़ी लाल मीणा ने वसुंधरा राजे के साथ मतभेद के चलते बीजेपी छोड़ दी थी. अब मीणा वोटरों को लुभाने के लिए बीजेपी ने किरोड़ी लाल मीणा को दोबारा पार्टी में शामिल किया है. किरोड़ी लाल मीणा की मीणा सुमदाय के लोगों के बीच अच्छी पकड़ मानी जाती है. वोटर्स इनके पीछे–पीछे वोट देने को राजी हो जाते हैं. ऐसे में किरोड़ी लाल मीणा का बीजेपी में शामिल हो जाने से मीणा समुदाय के वोट का फायदा बीजेपी को सहायक हुए है। [4]

राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा और कांग्रेस सहित सभी पार्टियों अपनी जीत तय करने को प्रयासरत है जीत के लिए नेताओ के दौरे तय किये जाते है। पारंपरिक प्रचार अभियान के साथ सोशल मिडिया पर भी विशेष जोर दिया जाता है। अलबत्ता पिछले रिकॉर्ड देखने पर पता चलता है कि प्रदेश में जातिगत गोलबंदी हार जीत तय होती रही है यही वजह है की पार्टियाँ जातिगत समीकरण अपने पक्ष में करने में जुटी है।[5]

रजनी एवं कोठारी– Cast in Indian politics में जाति समबन्धि निष्कर्ष निकाले है। इनका कहना है कि जातिवाद के कारण जातियां संगठित होकर आधुनिकरण की ओर अग्रसर हुई है। उनमे संगठन की भावना का विकास होकर जागृति आई है। जातियां एकजुट होकर राजनीती को प्रभावित करने लगी है।

उदाहरणत–

1. जाति के आधार पर मतदान व्यवहार
2. जाति के आधार पर उम्मीदवारों का चयन
3. जाति के आधार पर सीटों का वितरण
4. जाति के आधार पर निर्णय प्रक्रिया[6]

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. 15वीं विधान सभा निर्वाचन में जातिगत मतदान व्यवहार का विश्लेषण करना।
2. 15वीं विधानसभा में राजस्थान में जातियों की भूमिका स्पष्ट करना।
3. राजनीति पर जातिगत प्रभावों का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों को स्पष्ट करना।
4. जातिवाद के कारण हो रहे लोकतंत्र पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

**निष्कर्ष**

यह कहने की जरुरत नहीं है की इन सब के बाद मुद्दों की बात के कोई मायने नहीं रह जाते है। ऐसे

में अगर कोई अच्छी छवि और अच्छे चरित्र वाले प्रत्याक्षी चुनने की बात करता है तो यह विकल्प एक जाती विशेष बीच ही सिमट कर रह जाता है, प्रतिद्वंधीयों के वोट बैंक में सेंध मारने के लिए जाती के आधार पर कई डम्मी प्रत्याशी भी उतारे जा रहे है यह विडंबना नहीं तो और क्या है ? [7]

लिहाजा राजस्थान में यह साफ है कि जातिगत प्रभाव राजपूत, गुर्जर, जाट, मीणा और ओ.बी.सी. समुदाय का समर्थन जिस दल को मिलेगा और जो दल इन समुदाय के आपसी मतभेदों को सही तरीके से प्रबंधन करते हुए इन्द्रधनुषी गठबधन बनाने में कामयाब होगा अंत में सरकार उसी के बनेगी ।

**अन्त टिप्पणी**

1. *हिमांशु कोठारी, राजस्थान चुनाव 2018 रू यहाँ रेत का बवंडर और जातिगत समीकरण कभी भी तूफान ला सकते है, Hindi-firstpost-com*
2. *बेटल ऑफ राजस्थान – 8 जातियों के चक्रव्यू से होकर गुजरेगा राजस्थान के सिंघासन का रास्ता – www-hinidnewspost-com>thepath*
3. *जातिगत गोलबंदी तय करेगी हार–जीत htts://mnadumia-jagran-com] 10 Nov- 2018*
4. *हिमाशु कोठारी, राजस्थान चुनाव 2018 रू यहाँ रेत का बवंडर और जातिगत समीकरण कभी भी तूफान ला सकते है, Hindi-firstpost-com*
5. *जातिगत गोलबंदी तय करेगी हार–जीत htts://mnadumia-jagran-com] 10 Nov- 2018*
6. *रजनी एवं कोठारी " Cast in Indian Politicsß*
7. *राजस्थान में जाती से होगी जयजयकार, 24April 2009, रोहित परिहार, उ.ंरजां.पद*